श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरन सरोज रज,
निज मनु मुकुल सुधारि ।
बरनौ रघुवर विमल जसु,
जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौ पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि,
हरहु कलेश विकार ॥
जय हनुमान ग्यान गुण सागर ।
जय कपीस तिहु लोक उजागर ॥ १ ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अन्जनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥ २ ॥
महावीर विक्रम बजरन्गी ।
कुमति निवार सुमति के सन्गी ॥ ३ ॥
कन्चन वरन विराज सुबेसा ।
कानन कुन्डल कुन्चित केसा ॥ ४ ॥
हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजै ।
कान्धे मून्ज जनेऊ साजे ॥ ५ ॥
शन्कर सुवन केसरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥ ६ ॥

www.jousiama.com

विद्यावान गुणी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥ ७ ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥ ८ ॥
सूक्श्म रूप धरि सियहि दिखावा ।
विकट रूप धरि लन्का जरावा ॥ ९ ॥
भीम रूप धरि असुर सम्हारे ।
रामचन्द्र के काज सन्वारे ॥ १० ॥
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरशि उर लाये ॥ ११ ॥
रघुपति कीन्हीन बहुत बडाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ १२ ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावेन ।
अस कहि श्रीपति कन्ठ लगावैन ॥ १३ ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥ १४ ॥
यम कुबेर दिग्पाल जहान ते ।
कवि कोबिद कहि सके कहान ते ॥ १५ ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।
राम मिलाये राजपद दीन्हा ॥ १६ ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीशण माना ।

www.jousigma.com

लन्केश्वर भये सब जग जाना ॥ १७ ॥
युग सहस्र योजन पर भानु ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानु ॥ १८ ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीन ।
जलधि लान्घि गये अचरज नाहीन ॥ १९ ॥
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥
राम दुवारे तुम रखवारे ।
होत न आग्या बिनु पैसारे ॥ २१ ॥
सब सुख लहै तुम्हारी शरना ।
तुम रक्शक काहु को डरना ॥ २२ ॥
आपन तेज सम्हारौ आपै ।
तीनोन लोक हान्कते कान्पे ॥ २३ ॥
भूत पिशाच निकट नहिन आवै ।
महावीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जगत निरन्तर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥
सन्कट ते हनुमान च्छुडावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

www.yousigma.com

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥
चारोन जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥
साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ ३० ॥
अश्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
असबर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥
तुम्हरे भजन राम को भावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥
अन्त काल रघुबर पुर जाई ।
जहान जन्म हरि भक्त कहाई ॥ ३४ ॥
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेयी सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥
सन्कट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईन ।
क्रुपा करहु गुरुदेव की नाईन ॥ ३७ ॥
जो शत बार पाठ कर कोई ॥

www.jousigma.com

च्छूटहि बन्धि महा सुख होई ॥ ३८ ॥
जो यह पढै हनुमान चालीसा ।
होई सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ ४० ॥
पवनतनय सन्कट हरन,
मन्गल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ॥

www.yousigma.com